

॥ अर्हम् ॥

आचार्यश्री महाप्रज्ञ प्रवास व्यवस्था समिति, श्रीदृङ्गरगढ़ (बीकानेर)

दूरभाष : 01565-224600, 224900

ई-मेल : jstsdgh01565@gmail.com

उपासक प्रशिक्षण शिविर का छट्टा दिन

सूरज हमारा नहीं, हम सूरज का स्वागत करें – युवाचार्य महाश्रमण

–तुलसीराम चौरड़िया (मीडिया संयोजक)–

श्रीदृङ्गरगढ़ 6 फरवरी : युवाचार्य महाश्रमण ने कहा कि सूरज हमारा स्वागत न करें बल्कि हम सूरज का स्वागत करें। जब हम बहा मुर्हत में निद्रा का त्याग करेंगे तभी हम सूर्य का स्वागत कर सकते हैं। व्यक्ति को जल्दी उठकर धर्म की आराधना करनी चाहिए, इष्ठ का स्मरण करना चाहिए और स्वाध्याय से विचारों की शुद्धता में वृद्धि करनी चाहिए। वे उपरले तेरापंथ भवन में गीता एवं उत्तराध्ययन के तुलनात्मक प्रवचन में तमो गुण के कारणों पर प्रकाश डाल रहे थे। उन्होंने कहा कि तमो गुण का एक कारण निद्रा है। व्यक्ति को अतिनिद्रा से बचना चाहिए और निद्रा की कमी का भी ध्यान रखना स्वास्थ्य की दृष्टि से जरूरी होता है। दोनों स्थितियों का संतुलन आवश्यक है।

युवाचार्य महाश्रमण ने कहा कि प्रमाद दलदल के समान है। तमोगुण का काम है प्रमाद रूपी दलदल में डाल देना। दलदल में फंसने के बाद निकलना कठिन होता है। जो जागरुकता के साथ जीवन जीता है, वह अप्रमाद अवस्था को प्राप्त कर सकता है। तमोगुण का एक कारण आलस्य को बताते हुए उन्होंने कहा कि आलस्य विकास में बाधक हैं। जो पुरुषार्थ करता है, वह दुःखी नहीं हो सकता और असफल नहीं बनता है।

उन्होंने जैन दर्शन के मिथ्यात्व और गीता के तमोगुण में समानता बताते हुए कहा कि अधर्म को धर्म मान लेना, अदेव को देव मान लेना, अगुरु को गुरु मान लेना मिथ्यात्व है। इस मिथ्यात्व रूपी अंधकार को दूर करने वाले बहुत बड़ा उपकार करते हैं। उन्होंने कहा कि मोह ओर मोक्ष दो तरह के मार्ग हैं। अव्रत, मिथ्यात्व यह संसार में परिभ्रमण कराने वाले मोह मार्ग पर बढ़ाते हैं और संयम, त्याग मोक्ष मार्ग पर ले जाते हैं। मुनि दो समय प्रतिक्रमण करते हैं। प्रतिक्रमण मोह मार्ग पर बढ़ने वालों को मोक्ष मार्ग पर ले जाता है। उपासक प्रशिक्षण शिविर में भाग लेने वाले उपासकों की प्रतिक्रमण उच्चारण शुद्धि की सराहना करते हुए युवाचार्यवर ने कहा कि प्रतिक्रमण अपने घर में निवास करवाता है। हमारा घर हमारे भीतर है।

उपासक प्रशिक्षण शिविर के छट्टे दिन विभिन्न विषयों पर साधु-साधियों ने प्रशिक्षण प्रदान किया। उपासक प्रातः 5 बजे से रात्रि 10 बजे तक ध्यान, आसन, प्राणायाम, वक्तव्य कला के गुर, इतिहास, तत्त्व दर्शन आदि विषयों पर प्रशिक्षण प्राप्त करते हैं।

तुलसीराम चौरड़िया
मीडिया संयोजक